विडम्बना | बालश्रम में राजस्थान दूसरे नंबर पर, दक्षिण राजस्थान के उदयपुर संभाग से तस्करी जारी

शोषण से बुन रहे चमचमाते कपड़े

धीरेन्द्र जोशी @ उदयपुर
udaipur@patrika.com

दक्षिणी राजस्थान के उदयपुर संभाग से हजारो मासूम और किशोर बाल श्रमिकों के शोषण से गुजरात में बीटी कॉटन की जोखिमभरी खेती हो रही है। इससे दुनिया के चमचमाते कपड़े बनाने का धंधा जोरों से चल रहा है। मासूम बचपन को श्रम से बचाने के लिए राजस्थान और गुजरात सरकार के प्रयास दिखावी साबित हो रहे है। बाल श्रमिको की तस्करी करने वाले दलालो की धरपकड़ का अभियान भी फिसड्डी साबित हो रहा है। हाल मे इण्डिया कमेटी ऑफ द नीदरलैंड एण्ड द स्टॉप चाइल्ड लेबर की अध्ययन रिपोर्ट ने गुजरात व उदयपुर संभाग से बड़े पैमाने पर हो रही बालश्रम तस्करी के नेटवर्क की पोल खोलकर रख दी।

डॉ. डवुलरी वेंकटेश्वरलु की रिपोर्ट के अनुसार बाल श्रमिकों के पलायन को रोकने के सरकारी दावे खोखले साबित हो रहे है। उदयपुर जिले के झाड़ोल (फलासिया), डूंगरपुर, बांसवाड़ा जिलों से बड़ी संख्या मे आदिवासी बच्चो को गुजरात के कपास बीज प्लांट्स मे काम के लिए तस्करी कर ले जाया जा रहा है। यह अध्ययन गुजरात, राजस्थान, तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश मे हुआ है। इसमे सामने आया कि कॉटन प्लांट्स पर काम करने के लिए सर्वाधिक बच्चे गुजरात मे नियोजित किए हुए है। कपास खेतों मे बाल श्रम करवाने मे राजस्थान देश मे दूसरे स्थान पर है।

14 वर्ष तक के सवा लाख बच्चे

रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2014-15 मे गुजरात मे करीब 2 लाख 73 हजार तथा राजस्थान मे 29 हजार बच्चे कपास बीज प्लांट्स पर काम कर रहे थे। इनमें से 1 लाख 10 हजार बच्चे गुजरात तथा 13 हजार 500 बच्चे राजस्थान मे 14 वर्ष से कम उम्र के पाए गए। गुजरात में दक्षिणी राजस्थान के जिलों से पलायन के बाद वहां सर्वे में 47.8 प्रतिशत बालश्रमिक पाए गए, जिनसे कीटनाशको से जोखिम भरी खेती करवाई जाती है।

प्रशासन की लापरवाही

दक्षिणी राजस्थान मजदूर यूनियन के सचिव दौलतराम दामा ने बताया कि बाल श्रमिको को छुड़वाने मे इस वर्ष जिला प्रशासन की ओर से लापरवाही बरती गई है। फलस्वरूप बड़े पैमाने पर बच्चों को गुजरात ले जाया गया। इस वर्ष पूरे मौसम मे मात्र दो केस ही दर्ज किए गए। गुजरात बोर्डर पर चेक पोस्ट नही लगाए गए और ह्यूमन ट्रैफिकिंग रोकने के लिए टास्क फोर्स की बैठक तक नही बुलाई गई।

भयावह तस्वीर

2.73
लाख बच्चे कपास बीज प्लांट्स पर काम कर रहे थे वर्ष 2014-15 में गुजरात में

1.10
लाख बच्चे 14 वर्ष से कम उम्र के थे इनमें

29
हजार बच्चे कपास बीज प्लांट्स पर काम कर रहे थे वर्ष 2014-15 मे राजस्थान में

13
हजार 500 बच्चे 14 वर्ष से कम उम्र के थे इनमें

बीटी कॉटन के खेतों में यूं काम करने को बाध्य होते हैं बच्चे। -फाइल फोटो

यूं होती है शोषण की शुरुआत

इसलिए ले जाते हैं बच्चे

गुजरात में कपास की खेती बड़े क्षेत्रफल पर होती है। बनासकांठा के दियोधर, सियोरी आदि खेत्रों में जून-जुलाई से कपास पर फूल आने लगते हैं। अच्छी फसल के लिए एक-एक पौधे पर लगे फूलों पर हाथों से परागकण लगाए जाते हैं। इसके साथ ही खेती से संबंधित अन्य कार्य भी बच्चों से करवाए जाते हैं। दिन उगने के साथ ही बच्चों को इस काम में लगा दिया जाता है। जो पूरे दिन चलता है।

ऐसे ले जाते हैं

कॉटन मिल मलिकों का सम्पर्क आदिवासी क्षेत्रों के लोगों से होता हैं। ये लोग बच्चों को बहला-फुसलाकर अपने साथ ले जाते हैं। कई बार तो परिजनों को भी इसकी जानकारी नहीं दी जाती। वहां जाने के बाद दो से ढाई माह तक बच्चों को रखा जाता है। फसल पूरी तैयार होने पर उन्हें पुनः गांव में छोड़ा जाता है।

चिन्ताजनक

राजस्थान मे वर्ष 2009-10 में कॉटन की खेती नहीं के बराबर थी। लेकिन वर्ष 2014-15 में यहां बच्चो 5.3 प्रतिशत बाल श्रमिक कॉटन खेती मे काम कर रहे हैं।

यह है बच्चों के पलायन के आंकड़े

सर्वे के अनुसार सरकारी और गैर सरकारी प्रयासो के बावजूद कॉटन मिल वाले पांचों राज्यों मे बच्चो से श्रम करवाने का सिलसिला आशानुरूप कम नही हो रहा। वर्ष 2009-10 मे जहां आंध्र प्रदेश मे 22.7 प्रतिशत अन्य राज्यो से मंगवाए गए बच्चे श्रम कर रहे थे, वहीं वर्ष 2014-15 मे इनकी संख्या बढ़कर 30.4 प्रतिशत हो गई। गुजरात मे वर्ष 2009-10 मे 54.3 प्रतिशत और वर्ष 2014-15 मे 47.8 प्रतिशत, कर्नाटक मे वर्ष 2009-10 मे 6.1 प्रति. और वर्ष 2014-15 मे 8.3 प्रतिशत, तमिलनाडु मे वर्ष 2009-10 मे 74.1 प्रति. और वर्ष 2014-15 मे 67.2 प्रति. बच्चों से श्रम करवाया गया। राजस्थान मे वर्ष 2009-10 मे कॉटन की खेती नहीं के बराबर थी। लेकिन वर्ष 2014-15 मे यहां बच्चो 5.3 प्रतिशत बाल श्रमिक कॉटन खेती मे काम कर रहे है। इसके अलावा इन राज्यो के बच्चे भी खेती मे कार्य करते है।

बिना मजदूरी राशि दिए लौटाया

यूनियन के सदस्य सुधीर कटीयार ने बताया कि झाड़ोल के फुटण गांव से जून माह में 10 बच्चों को 4 मेट गुजरात ले गए। मेट ने इन बच्चों के अभिभावको को इसकी सूचना नहीं दी। इस पर अभिभावको को पता चलने पर उन्होंने मेट पर दबाव बनाया। करीब दो माह बाद वे इन बच्चो को पुनः लाए, लेकिन बच्चों की मजदूरी भी नही दी।

पत्रिका व्यू : आदिवासी कब तक सहेंगे इस दंश को

सच कितनी ही गहराई में क्यों नहीं छिपा हो, सामने आ ही जाता है। आदिवासी अंचल में मासूम बचपन को बचाने के लिए प्रयासों का ढोल पीटने वाले सरकारी दावे इस रिपोर्ट के सामने आने के बाद फुस्स हो गए। गुजरात से सटे उदयपुर जिले के कई इलाकों से छोटी उम्र के बच्चों को बीटी कॉटन के खेतों में झोंका जा रहा है। पिछले कई सालों से आदिवासी क्षेत्र का गरीब इस दंश से मुक्त नहीं हो पाया है। आखिर कब तक गरीब परिवारों को अपने बच्चों की जिन्दगी को दांव पर लगाना होगा? क्यों सरकार इनके बचपन को बचाने में नाकाम साबित हो रही है? ये ऐसे सवाल हैं जिनके जवाब जिम्मेदार अधिकारियों को देने होंगे। जल्द इस दिशा में कारगर प्रयास नहीं किए गए तो परिणाम और भयानक रूप में सामने आएंगे।